International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 92-93

वैश्वीकरण के दौर में नई तकनिकीयों का हिन्दी पर प्रभाव

डॉ० रवि दहिया

प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, हिन्दू कॉलेज, सोनीपत, हरयाणा, भारत।

प्रस्तावना

वर्तमान युग सूचना क्रांति एवं प्रौद्योगिकी का युग है। वैश्वीकरण के फलस्वरूप सम्पूर्ण विष्व एक वैष्विक ग्राम में परिवर्तित हो चुका है। सूचना क्रांति के इस दौर में दूरियाँ समाप्त हो चुकी है। ''भूमण्डलीकरण के इस पूरे दौर में पूरी दुनिया में योजनाबद्ध नियंत्रित अर्थव्यवस्था की जगह सारा कुछ बाजार के हवाले कर दिया है। इससे संस्कृतियाँ और भाषाएँ प्रभावित हुई है।[1]'' जब इस परिवर्तन का प्रभाव संस्कृति एवं भाषा पर हुआ तो वैश्विक ग्राम में अपना अस्तित्व बनाये रखने हेतु प्रतिस्पर्द्धा भी बढ़ी। इस संबंध में प्रसाद की पंक्तियाँ उपर्युक्त प्रतीत होती है–

''यह नीड़ मनोहर कृतियों का
यह विष्व एक रंगस्थल है
है परम्परा लग रही यहाँ
ठहरा जिसमें जितना बल है।[2]''

वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी का रूप भी निरंतर परिवर्तित हो रहा है, सूचना प्रौद्योगिकी एवं नवीन तकनीकों को हिन्दी बड़ी ही सहजता के साथ आत्मसात कर रही है। कोई सौ साल पहले फैलन ने अपनी 'न्यू हिन्दुस्तानी–इंग्लिष डिक्षनरी' की भूमिका में 'हिन्दी को जनता की भाषा' कहा था और बताया था कि ''यह भाषा साहित्यिक, वैज्ञानिक, नैतिक और सामाजिक उत्थान का सर्वोत्तम माध्यम है।[3]''

वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी विश्वभाषा के रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित हो रही है। वह नित नई प्रौद्योगिकी के साथ चल रही है, हिन्दी के पास उसका विस्तृत तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली का भण्डार है, अपने लचीलेपन एवं आत्मसात करने के गुण के कारण हिन्दी मषीन व मनुष्य के बीच सहजतापूर्वक संबंध भी स्थापित कर पा रही है एवं विश्व की एक बड़ी आबादी द्वारा प्रयोग में भी लाई जा रही है। हिन्दी में उपरोक्त सभी गुण विद्यमान होने के कारण वह सूचना प्रौद्योगिकी की सहचारिणी एवं विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने की और अग्रसर है।

जनसंचार माध्यमों के अंतर्राष्ट्रीय प्रसार एवं प्रचार के फलस्वरूप विश्व एक 'ग्लोबल विलेज' बन चुका है। कोई भी घटना विष्व के किसी छोर पर घटित हो, उसकी सूचना तत्काल सारी दुनिया में पहुँच जाती है और उसकी प्रतिक्रिया भी तुरंत मिल जाती है। अमेरिकी द्वारा ओसामा बिन लादेन का खात्मा हो या अरब क्रांति की शुरूआत, इन खबरों तक पहुँच ट्वीटर के माध्यम से आसान हो गई एवं मिनिटों में संपूर्ण विष्व में फैल गई।

इसी प्रकार अनेक सोषल वेबसाइट उपलब्ध है। जहां आप अपने विचारों का संप्रेषण कर सकते हैं। प्रौद्योगिकी के इस युग में भाषा की अनिवार्यता नहीं रह गई है। हिन्दी, अंग्रेजी, हिंग्लिष या अन्य भाषा एवं उनके शब्दों का प्रयोग आज के युग में प्रचुरता से हो रहा है। ट्रांसलिटरेषन की सुविधा उपलब्ध होने से एक लिपि को दूसरी लिपि में सुविधानुसार परिवर्तित किया जा रहा है। विभिन्न समाचार पत्र, पत्रिकाएं, आलेख आदि सभी इंटरनेट के माध्यम से पढ़े जा सकते हैं। अनुभूति डॉट काम एवं अभिव्यक्ति डॉट काम में गद्य एवं पद्य की विद्या की जानकारी उपलब्ध है। अंतर्राष्ट्रीय सर्च 'सिफी' के साथ 'खोज' हिन्दी की सामग्री प्राप्त करने के लिए सुलभ है। सॉफ्टवेयर कंपनी सुवी इन्फार्मेषन सिस्टम्स इंदौर ने हिन्दी देवनागरी में प्रथम निःषुल्क ई–मेल सेवा का प्रारंभ किया है। अल्प, लीला, गुरू, भाषा भारती, शब्दमाला, सिद्धार्थ आदि प्रमुख सॉफ्टवेयर्स हैं जो हिन्दी सीखने–लिखने के साथ कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य को सरल बनाते हैं। इन सॉफ्टवेयर्स में स्पैल चेक, डिक्शनरी तथा समानान्तर कोष की सुविधा भी उपलब्ध है।

इस प्रकार हिन्दी दृष्य–श्रृव्य एवं सभी जन संचार माध्यमों के द्वारा अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। व्यापार–व्यवसाय के क्षेत्र में भी हिन्दी अन्य भाषाओं के साथ मिलकर एक विष्व भाषा के रूप में सामने आ रही है। क्योंकि व्यापार–व्यवसाय के क्षेत्र में प्रयुक्त और प्रचलित भाषा आम होते हुए भी खास होती है, साधारण होते हुए भी विशिष्ट होती है, ऐसा होना आवष्यक भी है अन्यथा चाहे जैसा उत्पाद हो अनबिका पड़ा रह जाएगा। एक मालवी कहावत इस संदर्भ में भाषा के महत्व को उजागर करती है –

''बोले जिका धूरा बिके
नी बोले बिकी जुवार भी पड़ी रे जाय।''

अर्थात् विशिष्ट रूप में बोलकर प्रचार करने से धूल तक बिक जाती है और इसके अभाव में ज्वार भी नहीं बिक सकती। भाषा का व्यापार जगत में महत्व और आवश्यकता निर्विवाद है। इसी कारण से विज्ञापनों की दुनिया में हिंग्लिष का वर्चस्व दिखाई पड़ता है – केष तेल के विज्ञापन हेतु प्रयुक्त पंक्तियां – ''प्रॉब्लम फ्री बालों के एक्स्ट्रा पोषण। इसी प्रकार ''फिल्मी संवादों में और गीतों में स्थानीयता अथवा क्षेत्रीयता के रंग के अलावा उनमें अंग्रेजी मिश्रण भी धीरे–धीरे बढ़ने लगा है।[4]'' हाल ही में आई हिन्दी फिल्म चेन्नई एक्सप्रेस में हिन्दी, इंग्लिष, तमिल तीनों भाषा के संवाद सुनने को मिले है, जो वैश्वीकरण के इस युग में वैष्विक भाषा की सार्थकता को सिद्ध करते हैं और इन सब माध्यमों में हिन्दी की उपस्थिति निष्चित रूप से उसे एक मजबूत विश्व भाषा के रूप में स्थापित करने की क्षमता रखती है। विश्व के कई देशों में हिन्दी शिक्षण के पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं क्योंकि किसी भी राष्ट्र में टिकने का सर्वप्रमुख रास्ता वहां की संपर्क भाषा की जानकारी होना है।

आधुनिक युग औद्योगिक क्रांति के साथ–साथ 'विज्ञापन क्रांति' का युग भी बन चुका है। फलतः व्यापार का क्षेत्र राष्ट्रीय से अंतर्राष्ट्रीय हो गया है। वर्तमान बाजार 'विक्रेता का बाजार' से 'क्रेता का बाजार' बन चुका है एवं सर्वाधिक उपयुक्त वातावरण भारतीय अर्थव्यवस्था में दिखता है, अतः वैश्विक प्रतिस्पर्धा के दौर में टिके रहने के लिए हिन्दी भाषा की जानकारी अत्यंत आवष्यक समझी जाने लगी है। इसी को ध्यान में रखते हुए सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार के क्षेत्र में अधिकाधिक हिन्दी अनुकूल सॉफ्टवेयरों का

विकास किया जा रहा है, जिससे कार्य करने में आसानी हो एवं एक वृहद बाजार व्यवस्था का अंग बना जा सके।

वर्तमान समय में दृष्य–श्रृव्य माध्यमों एवं सूचना प्राप्ति के विभिन्न स्त्रोतों यथा पत्र, पत्रिका, आदि में हिन्दी की उपस्थिति को नकारा नहीं जा सकता। हर माध्यम में हिन्दी अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रही है। यह हिन्दी की महत्ता ही है कि उसे संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाए जाने की मांग अब उठने लगी है एवं विभिन्न राष्ट्रों द्वारा उस मांग का समर्थन भी किया जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चयनित हिन्दी निबंध – डॉ. राघव प्रकाश
2. कामायनी – जय शंकर प्रसाद
3. न्यू हिन्दुस्तानी – इंग्लिश डिक्शनरी – फैलन
4. सूचना क्रांति और विश्व भाषा हिन्दी – प्रो. हरिमोहन